



INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Assignment Submission for Term-End Exam June - 2024

ENROLLMENT NUMBER :

2	2	5	4	7	0	3	0	8	2
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

NAME OF THE STUDENT : NIKITA CHAUHAN

STUDENT ADDRESS : Akbarpur Baharampur, Ghazipur, UP

PROGRAMME TITLE & CODE : MHD: Master of Arts (Hindi)

COURSE TITLE : Premchand Ki Kahaniya

COURSE CODE : MHD-10

REGIONAL CENTRE NAME & CODE : 07, Delhi 1 (Mahan estate, (South Delhi))

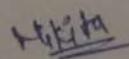
STUDY CENTRE NAME & CODE : 0710: Deshbhanda College (710)

MOBILE NUMBER :

7	3	0	3	8	2	2	4	1	2
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

E-MAIL ID : nikitachauhan7838@gmail.com

DATE OF SUBMISSION: 28-04-2024


(SIGNATURE OF THE STUDENT)



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068
Indira Gandhi National Open University
Maidan Garhi, New Delhi - 110068



IGNOU - Student Identity Card

Enrolment Number : 2254703082

RC Code : 07: DELHI 1 (MOHAN ESTATE (SOUTH DELHI))

Name of the Programme : MHD : MASTER OF ARTS (HINDI)

Name : NIKITA CHAUHAN

Father's Name : VEERPAL SINGH CHAUHAN

2254703082

Address : HOUSE NO 186 GALI NO 2 , BUDH VIHAR
AKBARPUR BAHARAMPUR
GHAZIABADGHAZIABAD UTTAR PRADESH



Pin Code : 201009

Instructions :

1. This card should be produced on demand at the Study Center, Examination Center or any other Establishment of IGNOU to use its facilities.
2. The facilities would be available only relating to the Programme/course for which the student is registered.
3. This ID Card is generated online. Students are advised to take a color print of this ID Card and get it laminated.
4. The student details can be cross checked with the QR Code at www.ignou.ac.in

Registrar
Student Registration Division

एम.एच.डी.-10
प्रेमचंद की कहानियाँ
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.-10
 सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-10 / टी.एम.ए / 2023-2024
 कुल अंक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

10 x 2 = 20

(क) लाडली को काकी से अल्पतः प्रेम था। बेचारी भोली लड़की थी। बाल—विनोद और चंचलता की उसमें गध तक न थी। दोनों बार जब उसके माता—पिता ने काकी को निर्दर्शता से घसीटा तो लाडली का हृदय ऐंठ कर रह गया। वह झूँझला रही थी कि यह लोग काकी को क्यों बहुत—सी पुढ़ियाँ नहीं दे देते। क्या मेहमान सब की सब खा जायेंगे? और यदि काकी ने मेहमानों के पहले खा लिया तो क्या बिगड़ जाएगा? वह काकी के पास जा कर उन्हें धैर्य देना चाहती थी, परंतु माता के भय से न जाती थी। उसने अपने हिस्से की पूरियाँ बिल्कुल न खायी थीं। अपनी गुड़िया की पिटारी में बन्द कर रखी थी। उन पूढ़ियों को काकी के पास ले जाना चाहती थी। उसका हृदय अधीर हो रहा था! बूढ़ी काकी मेरी बात सुनते ही उठ बैठेंगी, पूरियाँ देख कर प्रसन्न होंगी! मुझे खूब प्यार करेगी?

(ख) पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह कैसे चाहती हैं न चाहती है। लेटे ही लेटे गर्व से बोले चलो हम आते हैं। यह कह कर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंता से पान के बीड़े लगा कर खाये। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दरोगा के पास आ कर बोले, बाबू जी आशीर्वाद् कहिए, हमसे ऐसा कौन—सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गयीं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा—दृष्टि रहनी चाहिए।

(ग) किया के पश्चात् प्रतिक्रिया नैसर्गिक नियम है। शंकर साल भर एक तपस्या करने पर भी जब ऋण से मुक्त होने में सफल न हो सका तो उसका संयम निराशा के रूप में परिणत हो गया। उसने समझ लिया कि जब इतना कष्ट सहने पर भी साल भर में सात रूपये से अधिक न जमा कर सका तो अब और कौन सा उपाय है जिसके द्वारा इसके दूने रूपये जमा हों। जब सिर पर ऋण का बोझ ही लादना है तो क्या मन भर का और क्या सबा मन का। उसका उत्साह क्षीण हो गया, मिहनत से घृणा हो गयी। आशा उत्साह की जननी है, आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालक शक्ति है। शंकर आशा—हीन होकर उदासीन हो गया।

2. प्रेमचंद की कहानियाँ में अभिव्यक्त राष्ट्रवाद को स्पष्ट कीजिए। 16
3. प्रेमचंद किसान समस्या को किस प्रकार देखते थे? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए। 16
4. 'आलोचकों की दृष्टि में प्रेमचंद' विषय पर एक निबंध लिखिए। 16
5. 'गुल्ली डंडा' कहानी का विश्लेषण करते हुए उसमें अभिव्यक्त जीवन मूल्य को रेखांकित कीजिए। 16
6. 'सुजान भगत' कहानी का विश्लेषण करते हुए उसका मंतव्य स्पष्ट कीजिए। 16

१८.१८.८.८. - 10

प्रेमचंद ने कहानियाँ

अमी प्रब्लो ने उत्तर दीजा।

① निम्नलिखित में से किसका व्याख्या कीज़िएः—

(क) लाडली जो लाकी आर हारी ७
संदर्भ ए प्रशंगः— प्रस्तुत गदाचं इनकी लाकी के विषय व्यवाहार
 क्षासम्बाट प्रेमचंद ने आरामिक दौर ने आदर्शवादी
 सभालिक लाकी बुढ़ी लाकी से अक्तरित है। इन परिमाण में लाडली
 की भवः अधिति के माध्यम से पारिवार नी भनोवाति तथा बुढ़ी लाकी
 की परिस्थिति की अधिकांशत तुड़ी है।

व्याख्या:- प्रेमचंद यही कहाना चाहते हैं कि उसको को बुद्ध जगत से
 आर हारत है और बुद्ध लोग भी उसको से लगाव रखते हैं।
 बुढ़ी लाकी लाकी जो लाडली अपनी बुढ़ी लाकी से प्रेम-लाकी है। १९४५
 एक भाली आली और निश्चल लाकी है। उसके देखन धर में लाकी के
 अवसर ५० ओप दाने के समय भाली की इफ्का लिए बुढ़ी लाकी लब १६
 जाते हैं तो एक लार उसके पिता बुढ़ी भाली और वार उसकी
 माला रोप छार भाला रखती है किंतु भोजन नहीं मिलता। यह देखना
 लाडली का ४५५ व्याकुल हो जाता। भन ही भन झुंझला रही थी। कि
 उसके माला-पिता लाकी को लखा बहुत-सी पुरियाँ नहीं दे देता। लखा
 यहाँ आए दुष्ट भेहान लक ली भव रका लायेंगे? और थारी लाकी
 के भेहानों के पहले रका लिया तो क्या बिगाड़ जाएगा? ऐह लाकी
 के पास जो लार उहों धूर्धि देना चाहती थी, परंतु भाला के भाऊ
 से न जानी थी। उसके अपने हिंडों की पुरियाँ बिकुल के रकारी
 थी। उसे लाकी के लिए बचाकर अपनी बुड़ीया की भिटारी में बद्द

कर रखी थी। इन दृष्टियों की कानी के पास तो जाता वाहती थी।
उसका हमें अधिक हो रहा था। लाडली सोचती है कि उड़ी कानी उसकी
जात चुपते ही उठ बढ़ती, दृष्टियों द्वेष जरूर प्रशंसन होती। अपर इसे
ऐसा खाना करती।

(विशेष):-

- ① पार्सियाँक और सामाजिक विद्युतों के बीच नारी जी स्पृहि तथा
आसदी की परिणामि।
- ② माध्यमिक, गतिशील तथा प्रसंगालुकूल हैं।
- ③ अल भवोक्ता का जूझा, सरीक और मार्गिक विवरण।
- ④ विषयक और उद्देश्यों का समर्वय।
- ⑤ जून वाक्य और मुदाक्षरों के माध्यम से प्रभुति।

प्रासांगिकता:- इन पांचियों के द्वारा से प्रेमचंद सर्वोत्तम जरना वाहत
है कि वृद्धों जो उकाहुआ क्योंकि व्याकैत त भावकर उनकी
ईश्वरीयों का सम्मान किया जाता वाहिज। यसी ग्रन्थ में के लाडली के
माध्यम से यह भी दिखाते हैं कि वस्तो जी महजता सामाजिक संबंधों
के लिए कितना जरूरी होते हैं।

इसे परिवार में लाडली ही एक जैसी थी जो उड़ी कानी की
दुलारी थी और इसे भी कानी से लगाव था। न लिकि प्रेम लाल्के
दोनों को एक-इसरे से भवानुभूति भी थी। १८८८ आरों यह या
कि लाडली को अपने दोनों भाइयों के दर से अपने हित्यों जी
रवाधवर्मु आदि रवाने के लिए कानी को लिया गई और लुराकित
एगाह नहीं थी। लाडली जो अपने दोनों भाइयों ने दर से अपने हित्यों
की रवाधवर्मु आदि रवाने के लिए कानी के लिया गई और
लुराकित रहा है वही थी।

बुरे समय में होने परिवार में लाडली ही एक जिसी थी पाँच बुली गानी की हुलाई भी और उसे जी लाकी से लगाव था तो शिर्क प्रेम वालिक वालों को एक-दूसरे से सद्गुम्भति जी थी। इसका लाला खटपा कि लाडली को अपने बांसे आइयों ने ८२ से अपने दिवसी ली रवाधसन्तु आदि रवाहों के लिए लाकी के अनियाँ नाई और छुलकीत खण्ड गही थी।

आधुनिक इतिहास में ३५८्यास सम्राट के नाम से प्रसिद्ध लालीगढ़ प्रेमपट्ट ली काहाबी छुली लाकी 'मातवीभ कलणा' की भावना से ओत-प्रोत काहाबी है। इसमें लेखक ने 'छुली लाकी' के भृत्यम से समाज परिवार ली उस समस्या को उठाया है, जहाँ वृद्धजनों औ उनकी लात खाय-दाद-सभ्यति लंबे के बाद उनकी उपेक्षा होती जाती है। केवल इतना ही नहीं, लात-लात पर उह हृष्णमानित और तिरस्थन किया जाता है, अरवट आधिक तक जी नहीं मिलता। सामाजिक अपार्ध के माध्यम से मुँझी प्रेमपट्ट है भनुष्य जी स्वार्पी भावनाओं ना धूमित और विभस जप प्रियत किया है।

काहानी का प्रश्नम करते हुए लेखक ने मानव-प्रीवलों के वृद्धावस्था और जीवन्यावस्था को एक दृष्टि से देखा है। यहमें लाई गई भी नहीं है। छुली लाकी में पीछे के ऐसा विवरण है कि लालीगढ़ और लाई भी उसकी विधिवादी पांच वर्ष जा समझ भीती हो चुका है। उसके बावान लट जी असमन भर चुके थे। इस अपार्ध ने उसा लाई नहीं था, विसे छुली लाकी अपना कह भक्ति। आमने-जड़से-जड़से घौंडे वायदे कर उसकी अपनी सभ्यति अपने नाम लिखवाली की का लालीपी उद्धिरथ बहुत ज़दी ही बदलते भगा। शुद्धिरथ की पर्वी रथा जी भवहार से ज्ञाएँ थी। लोकों द्विवर्ष से अवरथ उसे श्रवणता था।

बुद्धिराम और उसकी पत्नी का विवाह शूदी काकी के प्रति अंगौलिया
नठोर होता-पहा गया। यहाँ तक कि लिख बुद्धिया की जाएवाद से
भी - डेव भी सप्तमे प्रतिभाव नी आमदकी थी, वह अधिन तक
के लिए लखने लगी। शूदी काकी जीवन के इवाद के आगे चिन्ह
डिक्ट - शान - पिल्लाने लगती थी। हाथ - पैरों से लापार बुद्धिया
ज्ञानील ५२ १९६१ १६वीं अंगौल अपने प्रति अपेक्षा भरे विवाह ५२
प्रवृत्ति - पिल्लाती। बुद्धिराम के दोनों हाथ भी उसे पिलाते - परेशान अन्दे
में शुद्ध छाते थे। यहाँ तक कि वे दोनों उस बुद्धिया से अंगौल अपने
शुद्ध जा पानी जी डेवल देते थे। लेकिन बुद्धिराम नी ठटी जाइली
शूदी काकी से बहुत घार जाती थी लाडली आइयो से तेज लेकर
शूदी काकी की कोठरी में आ जाती थी और बाला-पकाना जो शुद्ध
नी छोता था, निज - लाकर शूदी काकी के जाप खाती थी।

कुछ अमर्य बाद बुद्धिराम के हाथ शुद्धराम नी सगाई थी। इसमें
आग लेने के लिए के लिए काकी मेहमान आए हुए थे। सारे ११७ -
में शुद्धी जा भहीले था। वारपाठ्य ५२ अराम जाए १६ ऐहमानों नी
गाई खोवा जाए १६ रहे थे। वही भाट प्रशासा में धर्म गाया रही थी।
खाना पकाने वी चुगात्ये आरे धर्म में कैले - शुद्धी थी कि खर्च उसे
भरपैठ अधिन ही नहीं लिलता ते लिहाई अंगौल केवाड़ी जैल विलासा।
१६ - १९६१ उसकी जीव अपलता रही थी। अंगौल दिन छोता तो १६
ते - १९६१ सभी जा ह्यान अपनी और एवीप लेती लाकिन
सप्तमान के अर्थ से १६ शुपचाप देंती थी। धर्मि - धर्मि ठसका में
बोकारू दाता - पकाना गया। अंगौल रेष्ट्रूं लवकर हमवाई के बाहरे के
पास खाकर बैठ गई। अपानक आपा की तरफ शूदी काकी ५२ ५२
तो आग बशुला हो ठी अंगौल शूदी काकी जो शुद्ध अला - शुद्ध कष।
अपभालित लाकर भी शूदी काकी शुद्ध नहीं लाली और रेगती हुई
शुपचाप अपनी कोठरी में पही गयी।

पांडित अलोपीदीन - कृष्ण-दुर्विष्ट रहनी-वाई

- संवर्भः- धृतिवर्त

प्रमाणः:- मुख्यी विश्वास्य ने पे. अलोपीदीन जी नमक से अरी गाहियों की पुल ले पाए जा रही थी. पकड़ जी तभा पांडित जी जो उम्मीदा थे अलोपीदीन ने उसे ले आवधि से इस घटना जो हल लिया जाना चाहा। इस घटना जो कठा अतीक विश्वास्य प्रस्तुत किया गया है।

त्यरिक्षा:- पांडित अलोपीदीन अपने जनीजे १५८८ अष्टमिन्दश में गाहियों के साथ पुल पार कर रहे थे तभी उन्हें गाहियों के पकड़ खाने का अवैश्या लिया प्रवृत्तु पांडित तकिया भी नहीं। धरणां क्योंकि उनका विश्वास्य या कि धन जी दिव्यत छोड़ कर्त्ता जाह्या जो प्रभाव नहीं देता गाहियों द्वारा खाँगी। पांडित जी जो पूर्ण भरोसा या कि धन से पूर्णी के देवता तो क्या धन से पूर्णी के देवता तो क्या इक्षु के देवता को भी भवान्ता जो भक्ता है। अत्यन्त धरणी १५८८ है उनके इस ग्रन्थ में गत-प्रतिशत स्वयार्दि भी। धन के इस अभिनवादी भेसार में धन ही जब तुद है। धन से ही व्याप्ति का पक्ष जीता जो भक्ता है तभा धन जी आर्द्ध है। अत्यन्त धेसार धन जो ही उल्लाङ्घ है तभा धन के भक्ता ५८ ही लापता है। इस बायों विश्वास्य के शश उल्लाङ्घ भाले ५८ जी ज्ञानाती ऐ कहा कि धनों आते हैं। के उल्लुक वेदिक ये क्योंकि उक्ती उनकी साप भी। उनका विश्वास्य या कि ब्रोगा साथ लक्ष्मी (धन) को देवते ही प्रसन्न शुद्धि में पांडित जी जो ध्वागत कहे जो। अतः पांडित जी ने कही त्रिश्विलता से धन के लाइ ज्ञानार्थ खाज और अपनी रथाई आदि तभा ब्रोगा जी के पास प्रसवता के साथ गाज तभा जहां की अल्पांगी, इस आप आश्विदि दे दीजिए जिससे नमक से भद्री गाड़िया दूर जां और आपकी भैं आपकी

वे विन्दुल वेंटिक और अपनी जैसी तरफ साथ थी। उनका विश्वास पा की दशोंगा भी ने तभी धन ही अपनी गवाहा था कि धन ही ऐसा था है। अब यह एक व्यापक जा पक्ष पर्मार जा जाना है तभी धन ही आपकी है। अमरत लंसार धन की हुआम है तभी धन के संकेत न ही बाधता है। कभी जारी विनियोग के द्वारा हुआम है तभी पर की आपकाही जैसी जैसी कि चली आते हैं। दो विन्दुल वेंटिक और अपनी जैसी उनकी आप भी। उनका विश्वास पा ने जो भाइ भद्री (धन) को देखते ही अपने मुँह से पड़ित था जो इसके लिए था। अतः पड़ित था ने जो विनियोगिता से पान के लिए जगाकर खाया। और अपनी रसायन जौदी तभी दर्शाया थी ने पास प्रश्ननाता के साथ गाँठ तथा छाँट की वाहनी, वज्र आप आविष्टि के दीजिए। जिसके नमक से जटी गाँड़ियों छूट आँउँ और आपकी भेंट देकर प्रश्नन जर दिखा जाए। परन्तु यहाँ फुफ बही हुआ। पड़ित था जो धन-स्वप्न रवित हो गया।

- विशेष :-
- ① भाषा व्यंजन संस्कृत के सर गाँठों से लुप्त जाती।
 - ② 'धरो' के लिये से 'सिसकना'। जसे मुद्रारे का प्रथम।
 - ③ 'व्यञ्जित' लपत। 'भास्त्रियक'। जैसे प्रतिकार्यक गाँठों जा प्रथम।
 - ④ धन पर कर्तव्य जी विषय।

यही नी क्षम उमिहीर दुर्दात और देव-कुर्म व्याप कर मन बहुत झुकालाया। अब दोनों वासियों में संग्राम होता जा। धन ने उच्छव-उच्छवका आङ्गभांड फैदे तुरा किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पाँच से ली-व ली-व तक लौजत पूँछी, किन्तु धन ने अलौकिक विशेष के साथ इस उद्दिष्ट-उद्दिष्ट से लौजत जामुख अकेला पर्वत जी आँगि अटल, अलिचागित लडा था। अलोपीदिन तिराश धीकर जाल-अब इससे आधिक गोरा साहस नहीं। अजो आपको अविजाए है।

जो उसे गाड़ी के पड़के बात ना सहेज सिला परन्तु पौटिया तिक
जी वही धरेशाह क्योंकि उसका विश्वास था कि वह जी देवत देख
परोगा भाष्ट ने अचले ना हुए। जिससे गाड़ी छूट गांवी। पौटिया
जी ने इसे अरोगा था कि वह से मृत्यु के देवता तो क्या एक ने
देखा जो जी आवधा जा सकता है। लकड़ी जा रखियापी राज्य है।

उनके इस कथन में शत-प्रतिशत सच्चाई थी। आज के इस
आतिकतावादी संसार में वह जो ही गुलाम है तथा धन ने अकेले
पर ही लाचता है। इस कानून विश्वास के प्रश्न उल्लंघन बात पर वही
अपेक्षाही ऐसी बात कि वह आते हैं। वे विश्वास विकिया कि
जेहाँ उनके साथ थी। उनका विश्वास था कि वरोगा भाष्ट भक्ति (धन) ने
देवत ही अचल मुझ से पौटिया जो जा सकता जाए। शतःपौटिया जी
ने क्षी विश्वितता से पात के बीड़े लाकर राह भार पौटिया जी
अपनी रखी आदि तथा दर्शना जी ने पात अचलना ने भाष्ट गांव
तथा लहा कि अबूपी, लस आप आविवदि दे दीजिए। जिससे नमक
से लदी गाड़ियां छूट जाएं और आपकी भैंस आपका जिला जाएं
दरोगा विश्वास गंदकाशुनी गार्भी की वर्ष्ण से पौटिया अलोपीदीन जो
गिरफ्तार जाता है, लेकिं गार्भी ने अंत में इसी पौटिया अलोपीदीन
जी जहायता से मुश्किल लेकर उसके थां-भैंसजर जी लीकरी ने तैयार
हां आता है पौटिया अलोपीदीन जुँगी प्रेमचंद जी गार्भी नमक जा दरोगा
का एक पत्र है। गार्भी अध्यायार्द, दीमालपारी और सत्यनिष्ठा के विषयों
की पृष्ठाओं जूती है। पौटिया अलोपीदीन अपने इलाके के लिए भरपूर
और प्रतिष्ठित गमिनार्द थे जो लासो १०५० का जठर देने जूते थे।
तथा वह जो ही अब कुछ मानते थे। प्रत्येक व्यक्ति उससे जूता प्रभावित
था और उनका अस्ती जी है। वे प्रत्येक भागी जो वह जा।

पंडित, जिसे पंडित या पंडित भी कहा जाता है, एक अमरीकी पंडित लोगों या उपलाभ है, जो भारत के अमृत और अमरीकी धर्मी ने ब्रूज विवाही है। अंतिम नाम के रूप में पंडित एवं व्राजीन दंडों को प्रभावित है और अमरीकी में हिंदू और मुस्लिम दोनों ६२८ इमारत उपयोग किया जाता है। पंडित पंडित के अमान है। उससे यही उद्देश की बात पंचाली भाषा में है। पंडित का अर्थ विद्वान् या विज्ञानी भी होता है। अबोपीढ़ी गंज जैसे यह अट्टही तरह जाते लिया कि वंशीजर उसके लिए जही है, तो उसने विना किसी की प्रवाह लिया वंशीजर का अपनी सारी संपत्ति की देख-खेड़ ला आयीकारी ज्ञा दिया। वंशीजर भी यह जाते जान गया था कि अलोपीढ़ी गंज उसके असर्व आदर्श, कर्तव्यालिका, ईमानदारी को अभजा है। ऐसे यह व्याकुल लिल गमा जिसके आप १४३५ वह अपने वर्ण की १२३ वर्ष अवकाश भी 'दातागंध के मुक्ति वंशीजर वाक'। पंडित अलोपीढ़ी गंज इसके के सबसे मतिष्ठित भजीदार थे। एक पंडित जिसे पंडित भी कहा जाता है। उत्तरादित विभेद ज्ञान वाला व्याकुल या ज्ञान के किसी भी क्षेत्र ला विजेता होता है, याहू वह शास्त्र (पवित्र) हो हिंदू वर्ण में छुलकें या शास्त्र (धर्मिय), विभेद रूप से वृत्तिक ग्रन्थ.....

पाठीत (पंडित) का अर्थ है विद्वान् या अध्यापक से है, विज्ञान में वह जो सम्मुख और हिंदू विद्या, वर्ण, संगीत या वृत्तिशास्त्र में विजेता हो। अपने भूल अर्थ में 'पाठीत', २१६८ ला तात्पर्य एवं उस हिंदू से लिया जाता है जिसने वहों का नाम एक मुख्य भाग उसके उत्तरादित और गायत्र के लघु एवं ताल जाहिर कर्तव्य नाम उसके उत्तरादित और विभेद या विशुद्ध भी जह जाती है।

प्रेमचंद की कहानियों में आमिर्यात राष्ट्रवाद को स्वल्प कीजिए। प्रेमचंद ग्रामीण जीवन से आधिक संबंध थे, अतः उनकी आवेदन कहानियों ना विषय गांव के जीवन से बिल्कुल हैं, इसके अतिरिक्त उनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन, भगवान्न आंदोलन, जमींदारों साहूकारों, लालकी और डट्टा पदाधिकारियों जी सभस्याओं के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना विशेष रूप से मुश्वरित हुई राष्ट्रसभाट प्रेमचंद ने कानूनी रघनाकार है। उनकी जिसी कहानियों समाज के विविध पक्षों, परिस्थितियों, परिवर्तनों और प्रवृत्तियों ने आमिर्यात जरूरी है। यहाँ एक और उनकी कहानियों ग्रामीण भारत ने तत्काल प्रस्तुत करती है, वही दूसरी ओर पे राष्ट्रीयता जी भावना और चेतना से संपूर्ण है। प्रेमचंद ने की कहानियों में निर्दित राष्ट्रीय चेतना के संर्फ़ में रामविलास गांडी लिखते हैं — "प्रेमचंद का लक्ष्य सेवित राष्ट्रवाद से ऊपर था। वे जाते पे के इसक और नई लिंगों के लिए तमामे दुकिया जी आम जरता, जो भाई लड़ियाँ रही हैं, हिंदुस्तान का विद्युतीय आंदोलन उसी जा हित्ता है वे हिंदुस्तान के लोगों में एक नया भाव देख रहे थे कि दुकिया के तमाम मैदानों जाते वाले लोग भाई-भाई हैं।"

स्वाधीनता आंदोलन के आधार प्रेमचंद यह दिया—
वाहत है कि हमारे देश ही आमिर्यादी हुमें जो शिलाक भारत का आम जरता जी स्वाधीनता पाने की सहायता द्वारा भाष-साप, राष्ट्रीय आस्तित जी रक्षा जी जागृति है, वही राष्ट्रीय चेतना जी मुश्वरित अनिर्भावति प्रेमचंद जी कहानियों में हुई है।

साहित्यकार प्रेमचंद में देशप्रेम जी भावना विजय २०८ में विघ्नान थी, जिसका स्वाधीनता संग्राम जे भारतांतर विकास हुआ। प्रेमचंद स्वाधीनता जो जीवन और पराधीनता जो मृत्यु समझते थे, पराधीनता जी बड़ी तरह जे लिए भारी भारी में जीवन कमा सक्य

अंग गांधी ने सेवा और प्रेमचंद के साहित्य के दृश्य किया। उन्होंने असतीयों जा ज्ञानीसार जगाया ही नहीं, उसे उनकी दृष्टियाँ दिए थे ही परिचित नहीं कराया, वहाँ उसे अमिता जी एका के लिए अंग स्वाधीनता के हतु़ संगठित व महाआजित के लिए तथाँ जी किया। प्रेमचंद के साहित्य में भारत की आवाज उभरती है।

सिद्धार्थ का प्रवास, शून्यपादीक जीवन का प्रवास, अस्मृतियाँ निवारण, ज पुनितोद्धार, गरी जागरण, किसानों और मजदूरों की गति स्वापन आदि आदि सभी भीर्यों जा पितृन करते हुए जगमातर्स को उद्देशित कर राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन जा गति प्रवान जा प्राप्तियाँ की बड़ी में बढ़कर जगमातर्स तक अपनी लात पहुँचाने, उन्हें किंच व संगठित करने, उनमें अपने राष्ट्र के लिए राष्ट्राभिनी धर्म जून के लिए उन्होंने अपने सभस्त साहित्य को अभिन्नता दिया।

प्रेमचंद की राष्ट्रवाद जी अवधारणा पूर्णतः स्वाधीनता पर केंद्रित है। जितना विस्तृत है उनके लिए स्वाधीनता जा आवश्यक, उतना ही किस्तित है उनका राष्ट्रवाद। प्रेमचंद एक कालजीवी कथाकार है। उनकी जीवनियाँ राष्ट्रीय सभस्त्राओं से संपूर्ण हैं। उनकी जीवनियों के पात्र भाव उनकी जीवनियाँ भावभाव के लिए जीवनियाँ हैं। उनकी जीवनियाँ मातृभूमि पर भर जिए वे जा आंदोलन करती रहता रहता था। उनकी जीवनियाँ मातृभूमि पर भर जिए वे जा आंदोलन करती हैं। प्रेमचंद जी राष्ट्रीय चेतना की सभस्त आजीवनी उनकी जीवनियों हैं। प्रेमचंद जी राष्ट्रीय चेतना की सभस्त आजीवनी उनकी जीवनियों हैं। उनकी जीवनियों अपने अमीत, वर्तमान और भविष्य जा में हुई हैं। उनकी जीवनियों अपने अमीत, वर्तमान और भविष्य जा प्रवर्षते हुए राष्ट्र तथा अमान से आसन करती हैं। ये जीवनियों ग्रामनामिका सत्ता पर राष्ट्रप्रभु जो प्रोत्साहन करने जा प्रयास करती है। उनका सुख राष्ट्र जा सुख, उनका हुख राष्ट्र जा हुख अंग उनकी उनकी सभस्त्राहृष्ट राष्ट्र जी सभस्त्राहृष्ट हैं।

प्रेमपद की जहानियों में अभियन्त राष्ट्रवाद

प्रेमपद की राष्ट्रीय भावना का श्रोत एक आंदोलन नहीं, बरूद घरता के लीए उसी राष्ट्रीय चेतना थी, जिससे इसके प्रेमपद भी लगाकार थे। उसी राष्ट्रीय चेतना ने अभियानि उसी जहानियों में उड़ान संवेदनालक्ष शाकित के साथ हुई है। उठोने अपनी जहानियों के साथीता आंदोलन को जीवत पिंडा किया है। प्रेमपद अपनी जेंडरनी के माध्यम से साथीता आंदोलन में की भूमिका अपने वह थे। सामाजिक सरोकार और समतामूलक समाज की अधिपता प्रेमपद का छहरेया था। उनके लिक राष्ट्रवाद वही तक प्रबलावय था जहाँ तक वह साथीता आंदोलन को प्रयात नहीं उसका उसका पृथक प्रशास्त नहीं थके। अपनी जहानियों में उठोने अपनी प्रजातियों वाले को आजार किया है।

"साथ वतन" उसकी पहली लड़ी थी। इसमें समाहित जहानियों-द्वातियों के अनमोल रतन, और भरपूर, यही मेरा वतन है, जोका का तुरन्तलाल, सासारिक प्रेम और दैशप्रेम, में राष्ट्रीय लोतना दृष्टिगतिये ही लड़ती है। लगाकार प्रेमपद शारा राष्ट्रिय पहली जहानी भवंह में ही राष्ट्रवाद ने अल्पज्ञ सुनाई देने लगती है। कालांतर में प्रेमपद ने जहानियों में राष्ट्रवाद का यह ऐसा और जी मुखरित होते गया।

सभर यात्रा अनुत्तम के आंदोलन पर आधारित जहानी है इसमें साथीता आंदोलन के प्रति जनोभाव जो उड़त प्रभावी पिंडा किया गया है। इस जहानी में एक उद्घा लोहशी को नामिता करनामा देवतानियों विशेष कर खुवाओं जो प्रेरणा देने के जो भरपूर वर्ष किया गया है।

प्रेमचंद ने अपनी लहानी खुल्हा में स्वत्त्वात्ता आंदोलन की व्यापकता जा पितरा किया है। खुल्हा लहानी के माध्यम से यह अलीश्वरता किया गया है कि संवर्तन आंदोलन व्यापक अनांदोलन था, इसमें भगाऊ के सभी कार्यों की उपास्थिति थी। भारतीय स्वत्त्वात्ता आंदोलन ठहर लंतिक आलंडो भाष्य, अहिना, व्याच और व्याघ के आधार पर संपादित हो रहा था।

"आहुति" शब्दिक लहानी में इस बत जा पिता हुआ है कि जिस प्रकार से स्वयंसेवक अपने प्राण ध्येयी पर लकार संवर्द्धी आंदोलन को आगे लेता रहता है। मातृभूमि जी एका के लिए अपने भेद्यों जीवन की आहुति कर देता ही आहुति लहानी का धर्म है। "पर्वी" से पाते "लहानी में राष्ट्रप्रभ जी सर्वोपरि स्वीकार" किया गया है। इस लहानी में पर्वी अपने पाते से जाती है "भारत के सिंह भाई लोडी देवा है जिस पर जिसी दमरी जाति जा बासत है?" छोटे-छोटे बालू जी जिसी दूसरी जाति के गुजार लकार तकी रहता व्याहति। कथा एक हिंदुस्तानी के लिए यह लज्जा जी लहानी की लहानी है कि वह अपने पांडे से कायदे न लिए सरकार जो आप देना अपने ही आदर्शों के साथ का-का करे।"

प्रेमचंद ने राष्ट्रप्रभ की भावना को न केवल इसानी के दृष्टि न के बाकरों के भाव्यम से भी व्यक्त किया है। वे लोगों जी जिनका लहानी में लक्षी के लक्षा और स्वायत्त जी दिवाकर दे रहे हैं वे कि इस अस्त्र के दृष्टि द्वारा किया जा सकता है। "भेदु" लहानी में भगुण के लक्ष्यता भावों को भगुण स्वत्त्वात्ता आंदोलन से जड़ाकर एक व्या अर्थ देने जी लोकों की गई है। प्रेमचंद जी आगला जा कि स्वत्त्वात्ता आंदोलन जा नेतृत्व जीवके दार्थों में है।

जिससे अर्थे लोग उनसे प्रेरित जाहानियों में "लाल भीता" व "बुझूस" जैसे जहानियाँ आती हैं। प्रेमचंद ने अपनी जहानी हिंसा परमी शर्मः में त्रिकालीन पर्वतित दृश्य में शास्त्राधिकारी रूपी विषवृक्ष के बहते प्रभाव का प्रियता किया है। पूर्व प्रभेश्वर कहानी में उच्छित जाता हो एक आदर्श रूप प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद इस बात को अच्छी तरह बानते रहे की धार्मिक कष्टकर्ता राधूपाद को संकीर्ण बताती है। स्वाधीनता संग्राम को सार्विक और सामाजिक बातों के लिए संकीर्णता से लाहौर विकास के बढ़ावा।

"सुधार की साड़ी" और "वक्ता" जैसी जहानियों में असहयोग औपोलन के लाभक्रम ना विचार है। इसमें विदेशी प्रस्तुओं के लहिंगार और विभागीय लोडों की हानि जलाने जो प्रस्तुत किया गया है। वही "सती" जहानी की लाधिका अपने मातृभूमि की रक्षा करने के लिए अपनी भेना के साथ राज्यपुत्री में जाती है। प्रेमचंद अपनी जहानियों के माध्यम से स्त्रियों की आजीवारी को भी स्वाधीनता संग्राम में सुनिश्चित जरूर है। अकाली बालगा था कि आख्या आली के सहयोग और साथ के लिए न के बल व्याप्ति व्यक्त करना विश्वका है। तावान, लैड्म, मुर्खी पथ, जल, आण्डार चिंता, और राती सारंद्वा जैसी जहानियों में स्वाधीनता औपोलन का विचार और राज्यीय घेतना का अकाली स्वरूप प्रस्तुत हुआ है।

विष्णवी रूप में बह सकते हैं कि अपने साहित्य में भारतीय भवित्विन जो प्रस्तुत करने वाले भाववातावादी जापानार प्रेमचंद में राष्ट्रीय घेतना नी भी अवृद्ध जलक जिभती है। प्रेमचंद जी जहानियों मार्किक और संवेदना की दृष्टि से अद्वितीय है।

भारतीय पाठ्य और कल्पों को महसूस करते हुए उन्होंने समाज व राष्ट्र के उत्पान और उससे संबंधित समस्याओं जो अपनी जाहाजियों में एका भैरव भारतीयों जो देशभाजी और ग्रामीण भारत की आत्मा को प्रदर्शित करता है। इसी साहित्य में जब भी स्वाधीनता और बोलन का लिंग आता है। प्रेमचंद अपने पहले चार आठ छात्रों के लिए जिनका व अविचल योग्य है। इसी को परिभासित करते हुये अमृतराज ने उन्हें 'जलभ जा इन्हाँ के नाम से प्राप्तिकृत' किया। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित जाहाजियों में "भाजपिला" व "बुल्लूस" जैसी जाहाजियां आती हैं। प्रेमचंद ने अपनी जाहाजी हिस्सां परमो वर्ज़न में त्रिकालीन परिवर्ती १९२ में सांप्रदायिकता रूपी विषवृक्ष के बहते प्रभाव का अध्ययन किया है। पंच परमेश्वर जाहाजी में उन्होंने एकता जा एक आदर्श रूप प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद इस बात जो अट्टी तरह बानते हैं की व्यापिक बहुरत राष्ट्रवाद को संकीर्ण बताती है। स्वाधीनता संग्राम जो साधित और अकाल बनाते के लिए संकीर्णता से बहर तिक्खाना पड़ेगा।

उसी चेतना जी आतिथ्यानी उनकी जाहाजियों में अमृत संसेदतामुक शाली के आप हुई हैं। उन्होंने अपने जाहाजियों में स्वाधीनता और बोलन का जीवन अप्रिय किया है। प्रेमचंद अपनी त्रिवर्षी के माह्यमें से स्वाधीनता आदोलन में एक छोटी शूलिका अदा कर रहे हैं। सामाजिक स्तरों के और समतामूलक समाज की अपापना प्रेमचंद जो उद्देश्य था उनके लिए राष्ट्रवाद वही तक श्लोक्य था जहाँ तक वह स्वाधीनता आदोलन को व्यापित प्रवाह नहीं उभकर पर्य प्रवासन कर सके। अपनी जाहाजियों में उन्होंने अपनी प्रगतिशील सोच जो आजार किया है भाजे पतल उसकी पहली छोटी थी।

प्रेमर्थ किसान सभस्या को किस प्रकार देखते थे? ३६।६२।

साहित उत्तर दीजिए।

वह प्रकार प्रेमर्थ के अपने व्यवसायों में किसानों की आर्थिक सभस्या का विचार किया है। किसानों का गोष्ठा किस तरह भी होता है, यह स्थाने हुए गोष्ठीकों का गिरन - गिरन २० पॉ जा जी विचार किया है। किसानों का आर्थिक धारणा जब तक बढ़ जाए होता, तब तक उनकी दायत में सुधार नहीं होता। तब तक उनकी दायत में सुधार नहीं होता। किसानों को आर्थिक दृष्टि से सखल होना चाही।

आर्थिक किसान प्रेमर्थ के संपूर्ण साहित्य का केंद्रविन्दु है, जिसकी अमर्याओं, जीवनानुभवों और परिस्थितियों को व्यापक स्पनाइक परिप्रेक्षण में अनुरूप करते का लाभ किया है। इसका अभाव प्रभावी है - गोदावा अंका व्यवसाय और इसकी विवरण, बैंकों की कथा, सरकार गर्द गहरी, मुक्तियार्दी, मुक्तियार्दी, विवरण तथा अलियान जैसी जानियाँ। किसान जीवन की जीतनी गहरी, प्रामाणिक और वास्तविक समझ प्रेमर्थ के यहाँ जी यही, किसी समझ अव्यक्त दृष्टियों पर नहीं होती है। किसानों के जीवन की जास्ती को उन्होंने ऐसे रचुद तिज - तिज कर महसूस किया था, वैसा ही अपने कथा साहित्य में उतारा। प्रेमर्थ की किसानों से गोदावा जगाए था - उसी प्रकार जो गोदावा जीसे किसान का अपने खेतों के प्रति और भाई - भाई का अपने वर्षों के प्रति होता है।

किसानों की सभस्याओं के प्रति प्रेमर्थ जो दृष्टिकोण प्रेमर्थ जो साहित्य कुछ जीवन की जीवन कथा के साथ - साथ किसान सभाज की दुर्घट स्थितियों, परिस्थितियों और परेवानियों की विश्वास है। उनकी साहित्य में यित्ति त

कृषक के व्याप्ति जीवन में भारतीय पंचपराष्ठा, सास्कृतिक, विरासती, ऐतिहासिक शहर-रिवाजो, कहाने-कथाओं, अलूपत् अभिलाखाओं तथा जगीरों, मधाजन, पुरोहित और पुलिस आदि विविध कार्यों से उनके उप-संबंधों ने समझिगत अभिव्यक्ति हुई है।

कार्ज की समस्या

प्रेमचंद के समय में किसानों ने स्पेनिश दृष्टिकोण की व्याप्ति थी। उन्होंने ३५८ एक और अंग्रेजी शासन का दृष्टिकोण भाता हुआ अमीरों द्वारा लाया जाना चाहिए। इन दोनों के बीच पिस २५% किसान अपनी भैदनत ने अमाई भी रखा देता था। किसान समाज ने हुँस्यद स्पेनिशों, पारिस्थितिकों और प्रेस्टलियों की व्यापा अभिव्यक्ति करते हुए बहते हैं। "किसान गोपनीय में ही पदा होता है, गोपनीय में ही जीवित रहता है और गोपनीय में ही जिम्मेदारी से कूप कर सकता है और कूप करते समय गोपनीय की लेबी विराजत छोड़ जाता है।" उद्दीपन किसान द्वारा कार्ज की जेते ५% जिम्मेदारी भर तक उस कार्ज के लेख को नहीं रहने की विवशता को दर्शाता है। भगवान् भैरव गढ़ वाहानी में, "वीस वर्ष तक युलाजी करने के लाद जब गोपनीय मरता है तो भगवान् भैरव गढ़ के कार्ज में १२० रुपये उसके भैरव ५% स्वार थे। यिसके अनुगतान के लिए उसके भैरव वटे की गर्दन पकड़ी जाती है। उद्दीपन किसान द्वारा कार्ज जेते ५% जिम्मेदारी भर तक उस कार्ज के लेख को नहीं रहने की विवशता को दर्शाता है।" वीस वर्ष तक युलाजी करने के लाद जब गोपनीय मरता है तो भगवान् भैरव गढ़ के कार्ज में १२० रुपये हैं।

किसानों की समस्याओं के प्रति प्रेमचंद जा दृष्टिकोण

प्रेमचंद जा साहित्य लेखक जीवन ने लगातार लगातार भाष्य-भाष्य किसान समाज नी दुर्गद स्थितियों, परिस्थितियों और परेशानियों नी व्यस्पा है। उनके साहित्य में चित्रित लेखों के बाहर जीवन में भारतीय पंरपराओं, सांस्कृतिक विरासतों, लोहियों और शौति-रिवाजी, गाँड़-लधाओं आदि अधिक अधिक जीवन, भवान, पुरोहित और पुलिस आदि विविध कार्यों और उनके राष्ट्र-संबंधों नी समाजिक अलिंगनों की दृष्टिकोण दृष्टि है।

कार्ज की समस्या

प्रेमचंद के समय में किसानों नी इक्षित की व्यवस्था थी। उनके कानून एवं और अंग्रेजी शासन जा देखत पा ते दूसरी और बड़ी जाति जा जुझ। इन दोनों के बीच १८८५ एहे किसान अपनी भेदभाव नी जारी भी रखे देते हैं। किसान समाज नी दुर्गद, स्थितियों, परिस्थितियों और परेशानियों नी व्यस्पा अनियन्त्र रखते हुए रखते हैं—“किसान जाता में से पक्का दूता है”।

रवती और किसानों के वास्तविक स्थिति जा विवरण

प्रेमचंद ने रवती और किसानों की वास्तविक समस्याओं नो परेशान हुए उनका सटीक विवरण किया है। उन्होंने मुक्कियों में किसान जा भावारण और वास्तविक जीवन विवित किया गमा है। इस बाबती प्रे वह जी ऐसा किया है कि रवत बुक्के से किसान ने गर्व धूप धूत है किन्तु उसके लगातार भी वह अद्भुत भाता है। बुधनील कदानी प्रे वह

परिचयाभा है कि किसान के लिए रखती करता कितना जटिल होता जा सकता है। उनमें तंत्रिक परिवर्तन भी बराबर विधमान पा कि किसानों को किस तरह बचाया जाए। इसके लिए सदृशाली के नामों को खातना जरूरी है।

रखती किसानों को भविदि के नाम में देखना

प्रैमपंद का किसान दिन-हीन है, परिषट है, विवरण है, परलुट भन से परिषट नहीं है, उनमें मानवीयता और आभूषण कूट-कूट नहीं है। प्रैमपंद के अह पर्याया है कि किसान आज भी खेती को भविदि व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। उन्होंने किसानों की भावना जो वर्णन करते हुए कहते हैं — "क्षमि प्रथान देश में रखती कवल खोविका जो साधन लही है", सम्मान की वस्तु भी है।"

किसानों का स्वार्थ लिखि के लिए प्रयोगः

त्रिस्वार्थ भाव से समाज की ऐका करने वाला किसान देश और समाज के अर्थि उत्पादन का मूल साधन है। इस मूल साधन जो लोग अपने-अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करते हैं। इस जीवित साधन है। इस मूल साधन का लोग अपने-अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करते हैं। इस जीवित साधन को वास्तव में अनपढ़, अंधविश्वासी और धर्म-गीत मालाकर विजीव साधन जैसा दिया गया है। परं तरीं, निर्जीव साधन को कोई पीड़ा तो नहीं होती, किंतु विजीव साधन जी तरह जाने करने वाला किसान का अपने हिस्से में जो पीड़ा, अभाव, अपमान और डरकशा प्राप्त करता है। उसे भागने से उसकी मुक्ति कहाँ। उन्होंने किसान की ज्ञनीय स्थिति के लिए में लिखा है — "भारतीय किसान की इस सभ्य जैसी पर्यायी दशा है, उसे कोई शब्दों में

आकृत नहीं कर सकता। उसकी किसानों की परिस्थिति प्रवृत्ति
दुर्दशा को के स्वर्ण आत्म है आ उत्का भगवान् जाता है।"

किसानों की परिस्थिति प्रवृत्ति

 X X X X किसान दुर्बलता और

दूरता दानों के आप अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करता हुआ, दूरता
हुआ, समझाता करते हुए भारतीय किसान का व्यक्तित्व प्रेमचंद
की रूपनाओं में उभर कर आता है। आज जा किसान प्रेमचंद
साहित्य से अपने अतीत को झाँक कर देख सकता हुआ, दूरता
हुआ, समझाता करते हुए भारतीय किसान का व्यक्तित्व प्रेमचंद
की रूपनाओं में उभर कर आता है। आज का किसान प्रेमचंद
साहित्य से अपने अतीत को झाँक कर देख सकता है। रामाविलास
गाफ ते धीक ही लिखा है "हर कोई जानता है कि प्रेमचंद ने
भाज के सभी कर्म जी उष्णिका किसानों के चित्रण में सबसे
आधिक सफलता पायी है। वे हर तरह के किसानों को प्रस्तुत करते हैं,
उनके विशेष आधिक स्तर, उनकी विशेष विवरण।" उनकी
विशेष आधिक समझाएँ किसान-जीवन के हर काने से
परिचयत है। जैसी उनकी जातकारी असाधारण थी, वसा ही किसानों
से उनका इनहें भी गहरा था। किसानों के भूमिका में आने वाले
की ऊंची भवित्व के हर-कल-पुर्ण से वे वाकिफ थे।"

प्रेमचंद जा मातना था कि राष्ट्र की उत्तरति के लिए किसानों
और भजदूरों का विकास लकुत ही आवश्यक है। प्रेमचंद ने अपनी
रूपनाओं में किसानों की स्थिति पर, भारतीय गांधी जी
स्थिति पर और राष्ट्रीयवस्था पर धूरी विठ्ठा से चित्रण किया।
उनका मातना था कि "भारतीय किसान अर्थव्यवस्था जा आवार
जैसा है। उनके बड़े रुग्णादाल देश जी उन्हीं कर वेमानी होगी।"

किसानों का व्याख्या :

प्रेमचंद ने प्रमुखता से इच्छा है। ४०६१ के पूर्ण की रात में किसान की वास्तविक हालत की नालिकी आजीवानिकी की है। उसकी पृष्ठभूमि में भृगुवी की भूमिका है। किसान, विशेष रूप से छोटे किसानों की तकलीफी की वास्तवान इसमें है। "पूर्ण की रात जहाँ में डॉक के भौंसम और सहना साहूर के जुल्म की वाही भार की बीच धृपता है। उक्त बहुत ही छोटे और गरीब किसान हैं।"

किसानों की तासदी जा वर्णनः

प्रेमचंद ने चाहिये में किसान परिवार की आनतीक शूल्य व्यवस्था जा चितार है और उनके सामाजिक, व्यार्थिक डाखण जी प्रक्रिया इसमें दिखाई देती है। उन्निट जहाँ में किसान परिवार के अधूरे परिवार में बदले जाएं के अपार्थ और पीठ जो, उनके सामाजिक सम्मान जा दिक्षित जी तासदी जो प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचंद ने "विश्वकर्मा" जाहाँ में दिखाई प्रेषा जा मार्गिका चितार लिया है। नजराना-चुकाने के लिए किसान जो उच्च तक बेचनी पड़ी, आमहर्था नहीं पड़ी। प्रेमचंद ने शाखानीति जूते दुआ प्रेमचंद जो लिखा - "भारतीय किसान" की इस अमर घर्षी व्यवस्था दिखा है, उसे काई गर्वों में अंकित गई जाए अकलता। उनकी दुर्दशा जो वे ऐसे खाते हैं यह उनका अवान खाता है। जनीला जो समय पर मालगुजारी चाहिए अवान को समय पर जगान चाहिए उच्चर किसान जो ज्यादा जो लिए वे मुड़ी अब चाहिए पहले के लिए। उक्त लिए वे मुड़ी अब चाहिए पहले के लिए। १५८८८ परिवार चाहिए। उक्त आर और और्ध्वी उनके अस्ति उनके ऊह-

अंकित नहीं कर सकता। उसकी दुर्दशा को वे सर्वथा जानते हैं आउना अवश्यक जानता है।"

किसानों की परिस्थिति व प्रवृत्ति :

किसान दुर्बलता और दुर्दता को भाष्य अपनी परिस्थितियों से सम्बद्ध नहीं हुआ, इसने हुआ, समझीता नहीं हुआ भारतीय किसान का व्याकोंत्र प्रेमचंद ने स्वनामों में उभर कर आता है। आज का किसान प्रेमचंद साहित्य से अपने अतीत को जांक कर सकता है। राजविलास शर्मा ने ठीक ही लिखा है "हर लोह जानता है कि प्रेमचंद ने सभापति के सभी कर्मों ने अपेक्षा किसानों के पितृण में अवश्य अधिक समाजता पायी है।" वे हर लोह के किसानों को पहचानते हैं, उनके विकास आर्थिक स्तर, उनकी विजेन्ट विवरणाएँ उनकी विजेन्ट सामाजिक समस्याओं किसान-जीवन के हर कान से परिचित हैं। जैसी उनकी जातकारी असाध्यारण थी, वैसा ही किसानों से उनका स्नेह भी गोदा पा। किसानों के सम्पर्क में अनेकांशी शामिल भी ज़रूरी भूमिका है हर-जल-पुर्जे के वाकिफ़ हैं।" प्रेमचंद जा आनना था कि राष्ट्र की उन्नति के लिए किसानों और भजदूरों का विकास लहूत ही आवश्यक है। प्रेमचंद का आनना था कि राष्ट्र की उन्नति के लिए किसानों और भजदूरों का विकास लहूत ही आवश्यक है। प्रेमचंद ने अपनी स्पनाड़ी में किसानों की स्थिति पर, भारतीय गांधी की स्थिति पर और भवस्था पर ध्वनि शिष्ठा से जिता किया। उनका आनना था कि "भारतीय किसान अर्थवृत्त्या पर आधार स्तंभ है।" उनके वर्णन रुग्णालं द्वेरा जी उन्नीष्ठ जनना चेतायी। भारत की समृद्धि और प्रगति के लिए किसानों का उद्दार और आवभागिन्द्रि होना आवश्यक है।"

'आओ चको' जी दृष्टि में प्रेमचंद' विषय पर विबंध लिखिए।
 कपसमाट प्रेमचंद हिंदी लेखनी के अतिथास के अनुगमन साहित्यकार है। कपसमाट प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यासों और लेखनीयों जी गर्भान्ति ही नहीं कली १२८८ डिक्का लायाजल्प जी का १९५८ अंतर्भूत से लेकर मृत्यु तक जीवन के कष्टमध्य अनुभवों ने साहित्यकार प्रेमचंद को महान् लेखक। अंका में डिक्का जीवन लीत और भरवन जारी से की मुश्किल से पारिवार्य जा अडान-पाइन चला। अलं मनोविज्ञान से लेकर विचार मनःप्रियति तक और संस्कृति से लेकर सभाज तक जा हाले उसे लेकर बाले प्रेमचंद की रूपताओं में शतरं विविध हैं कि आप जी उसका काइ भानी नहीं। प्रेमचंद ने आठ दशकों पहले जो लिखा १९६ आप जी लोकप्रिय है। उन्होंने सभाज के अधिक को दुम्भा और ५२२८। इसे अपने साहित्य में उन्नतता से विराचा। कपा, लेखनी और उपन्यास में अपर्णवाद को सत्सता तथा सहजता से प्रस्तुत किया।

प्रेमचंद जी कपा साहित्य में अधिकांशतः जैसे विषयों को प्रस्तुत किया है। उनका सम्बन्ध आम घटता से हि दिखता है। प्रस्तुतः प्रेमचंद ने अपनी लेखनीयों में न तो अतीत का गाँश गाना किया है वह ही अन्यथा अविष्य की उपन्यास। उन्होंने उत्तर भारत से लेकर शुद्ध वक्षण धारों का अर्थ लगाता है। साहित्यकार प्रेमचंद ने धर्म की रात, ईश्वर, ईश्वरी काकी, के लैलों की कपा, पर्यावरण, गिलास, गुलली, दूषण, इष्य का वार्ष, भवीति, नमक जा वार्षिक, भवानी, और लकन जैसी कालजयी लेखनी तथा माध्यम भवासदन, रंगभूमि, लभिता, लिला, प्रतिका गवत और गोपाना जैसे सुप्रसिद्ध उपन्यास के माध्यम से आसाध लेखनीयों जो भवीति किया। आवित, दंपित और उपकृत का के प्रति डिक्की से वेणु और जहानुशास्ति हैं।

आलोचकों की दृष्टि में प्रेमचंद

लगभग 300 से ज्यादा

लोकानियों और कला से ज्यादा उपन्यासों का स्थान पर्याप्त महान
काथाकार् प्रेमचंद जा भार्हिये बतानी चाहिए अपने विस्तार् है कि उसे
ने कविता पाठक बनाकर भार्हियकार् भी मार्गदर्शित होता है। तिसदैन
प्रेमचंद हिन्दी भार्हिये में एक शीले का प्रतीक है। भौजुदा पाठी के
भार्हियकार् और भजीकर् भी उन्होंने 'भूतों न भविष्याते' वाली कही
का भार्हियकार् मानते हैं। अपनी रूपरेखा के मार्गदर्शन से उन्होंने
समाज को अपने इतिहासी परंपराओं और कुरीतियों से बिकाजते
का प्रयास किया। प्रेमचंद की कथाएँ जो किंकी दासता और डलीड़ते
के विरुद्ध आवाज बनकर मुख्य दुर्दशा, लालके उन्होंने सामाजिक संशोधन,
समझाव और समाजता के लिए अलश्च भी खार्हिये। हिन्दी भाषा भार्हिये
की दृश्या लाइन लेने वाले प्रेमचंद के भार्हिये जा अवलोकन सम्म—
सम्म पर अनेक सामीक्षकों ने जी हैं।

दुर्ग मधुरिणी और महान साहियकार् प्रेमचंद का जाई समाज
से पूछा हुआ भार्हियकार् मानता हैं तो जाई शारितों और वंचितों
का प्रतिनिधि। जिसी ने उनकी ए सातीक संकेतन की प्रवक्ष्या की तो किसी
देश की संघर्ष ए सरल भैष्य कांशाल जा क्षेत्र लीत गये, किन्तु
प्रेमचंद के पात्र आज भी हमारी जन्मना में जीवित हैं, विस्मृति जी
गत में नहीं गुम हुए। इत्यापि भवान ने गदा है — "काहानियों के
पात्र लक्ष्मुरुखी ए विविध हैं इसका लाला प्रेमचंद के नींदी अनुभव,
विस्मृत जान और इनसे भी लक्ष्मुरुख भत-आसपासी जी
विश्वरी जिदी ए विष्वर १५५ भनुधी, समाज, व्याकुंठ और उसके परिवेश
को जापा के कद्दू में जा रहा किया था। सामाजिक व्याकुंठ व्याकुंठ उनकी
काहानियों का नामक बना।"

प्रेमपंद ने किसान जीवन से संबंधित चुक्के से सुझा लाता को प्राभागिक रूप से अपने साहित्य में आलिखात किया। आज वह किसान प्रेमपंद साहित्य से अपने अतीत को झोक लाए देख सकता है शुभ्रसिद्ध अनीक कॉ. रामविलास अम्फ ने इसके लिए है, "हर आई खाता है कि प्रेमपंद ने अमाज के सभी वर्षों की अपेक्षा किसानों के पितृण ऐसे भक्षे आधिक भक्षण पायी हैं।" वे हर दृष्टि के किसानों को पृथिवी और उनके विजित आर्थिक स्तर, उनकी विजित विचारधाराओं उनकी विजित आर्थिक स्तर, उनकी विजित विचारधाराओं उनकी जातीय असाध्यता थी, वैसा ही किसानों से उनका स्तृत भी गहरा था। किसानों के अम्बुज में आवेदी शाखा की घटी भवित्व के हर काले-पुर्ण एवं वे वाकिफ थे।" हिन्दी ने संश्लेषित उपत्याक गावान में प्रेमपाद ने आरतीय किसानों के जीवन संघर्ष और परामर्श जी गाना और त्रासद भवाना था कही है। तिर्क्षित वर्ष ने लेखा कि — "गावान में प्रेमपंद ने पहली बार आरतीय किसानों के अंखों में आविष्य का प्रस्तुत किया है।"

शुभ्रसिद्ध अनीक आर्य रामचंद्र गुजल ने प्रेमपंद जी गहिरिय जीवन का साहित्यकार आगा है। अपने इतिहास ग्रन्थ में उन्होंने प्रेमपंद की प्रशंसा की है। प्रेमपंद के शुग-प्रवर्तक अवदान की घटी अपने इतिहास ग्रन्थ में उन्होंने प्रेमपंद जी प्रशंसा की है। प्रेमपंद ने युग-प्रवर्तक अवदान की घटी लगते हुए कॉ. लोद्रु लेखते हैं, "प्रभुतः उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य जो 'मनारंभन' के स्तर से उत्तम लीवन के साप सार्वतंत्र से ऊड़ने जा आए किया। यारे और कहते हुए जीवन और अनेक सामाजिक समस्याओं... ने उन्हें प्रेमपंद जीसन् लेखते हैं।" प्रेरित किया। "मनारंभन साहित्यकार प्रभुतः की जीवनियों के घोषणे में गमन किशोर गोविलजा लिखते हैं — प्रेमपंद हिन्दी के पहले ऐसे गदावीकार थे जिन्होंने लक्षणी की

स्पन के आप-आप कहानी आधुनिक शास्त्र को भी बहस्तर प्रवान किया। प्रेमचंद ने अधारि 'सोजैवतन से कफल' कहानी तक जो लगभग तीन सौ वर्षों की रूपना की भी उनसे भी उनका कहानी शास्त्र समझा जा सकता है...."

प्रेमचंद के अंशुर्फ साहित्य की विविधता और महत्व के परिलक्षित करते हुए ह्यारीप्रसाद द्विवदी कहते हैं - "प्रेमचंद ने कथा साहित्य अद्यतन से उत्तर भारत की समस्त जड़तान के अवार-विचार, भाषा-भाष, आठा-आकांक्षा, दुखः-दर्द, रीति-रिवाजी को ज्ञान करते हैं। ज्ञापियों से भृत्यों तक, शोभये वालों से धनों तक, गाँव-भू गाँव की रुग्णानियों तक, अनीरों से शुभ्यों तक आपका इतने काँचाल्पुर्वक ए प्राभाविक भाष भू अर्थ कोई नहीं ले सकता। इनकी विविधता अव्यक्त नहीं लिखती।"

नदियों वालपायी अधारि प्रारंभ में प्रेमचंद के साहित्य की अमुमित विश्लेषण गही और पाने के कारण कहते हैं "इस तो अधिकारि की अम्भुर्फ शृंतियों में एक अवतारित चैतन्यार्थ देखता चाहते हैं। यह व्यारा हमें प्रेमचंद से नहीं लिखती। वहां अद्वृत्य श्रीरामानन्द के अनापन्थक विस्तार उनमें छुत आधिक है। इससे उनकी काला में अम्भुर्फ आ गई है।" तथारि बालानं ये उन्होंने अपने विष्णुर्खे ने अंशुर्फ करते हुए "साधारण विवेक, अनुभव की प्रांता, आध्यात्मिक और कथा का अवाभाविक सांदर्भ प्रेमचंद की ऐसी विवेकता है, जो उन्हें हिन्दी लहानियों का श्रेष्ठ विभाग दिला देती है। प्रेमचंद की अनानिक द्वारे अतिशाय उदार और तर्थपूर्फ हैं।" प्रेमचंद के साहित्य के लिए मेरे आधुनिक युगीन सालिक डॉ. न. अमर निहं तो कहा है "यदि हिन्दी उपन्यास में गाँधी का क्रेवता है तो प्रेमचंद के उपन्यास को ज्ञानित।"

प्रेमचंद ने साहित्य के बारे में आधुनिक चुनीन सनीकार्ट डॉ. नामज्ञ सिंह ने लिखा है "यदि हिंदी उपन्यास में गाँधी जी देखने होते तो प्रेमचंद के श्वरसार्स जो ज्ञाति ।" वे आज जहाँ हैं - "प्रेमचंद ने आरविरी दिलों में जो कहानियाँ लिखी उनमें सज्जति, छालूर जा छाँड़ों, इधर का दाम हैं। उन तीरों वित्त के साथ प्रेमचंद जी अपनी जला अपने लिखर ५२ पहुँचे गयी थी।" हिंदी तीरों वित्त के साथ प्रेमचंद जी अपनी जला अपने लिखर ५२ पहुँचे गयी थी।" हिंदी के प्राचीन आलोचक भैरवर पाठ्य लिखते हैं "प्रेमचंद जी ने लेखक एवं उनके लेखक द्वेषा धोना तभी होता है एवं लगभग कहा ही है कि अंग्रेजी साहित्य में इसका शास्त्रीयता आज तक ५७ बही हुआ। प्रेमचंद ने जिन समस्याओं पर कहानी और उपन्यासों का लेखन किया था तो भी सभी समस्याएँ आज भी मौजूद हैं और उनमें से कुछ ले प्रेमचंद के ज्ञाने से अधिक भी ज्ञान लेणे में आज मौजूद है।" सभकालीन साहित्यकार ३५७ फ़्रांस प्रेमचंद जी की महिला ने सभजाने हुए लिखते हैं "आज जा लेवक आत्मचेतस है, अपनी सफालता के बारे में तो सोचता है लेकिन उसके पास प्रेमचंद जैसी विश्वदृष्टि ना अभाव है।"

समग्रतः: यह अनुसर है कि प्रेमचंद के लिए विशेष तरीके हैं अपितृ चुग के प्रणेता हैं। उनके व्यक्तिगत और कृतिगत जीवन की असाधारण और अद्वितीयता को परिलक्षित करते हुए अभूत राधे में उन्हें कलम का लिपाही उपायी एवं विश्वासित किया। "वास्तव में प्रेमचंद जी के लिपाही हैं जो सभाज में व्याप्त चुराक्षों से जड़ते हुए दिखाई देते हैं।" गोपालराधे ने उन्हें जलाभ जा मधुरूर लिखा। उल्लंघनित एवं जलार वयस्क मनःप्रियते तक और संस्कृति से जलार सभाज कोई साती नहीं। प्रेमचंद ने आठ दशकों ५६ लोगों जो लिखी ७६ चाप और लकाप्य हैं। उन्हाँते सभाज के यथार्थ जो छुआ और पूछा।

उपचार के क्षेत्र में उनके अप्रतिम अवदान को देखते हुए महान् भावित्यकार श्रीमपंदि ने उन्हें उपचार अभ्यास अनुसूची-संबोधित किया। प्रेमपंदि ने हिन्दी अभ्यासक भावित्य की गवाहात परंपरा के अपने लेरवन के द्वारा एक परिपक्व परंपरा में रखा गया है। इनके विषय में उन्हें समीक्षक ने लिखा है — "ऐतिहासिक, १९६३ च. मर्गीवज्ञानिक, सामाजिक, पारित एवं व्याक्तिगत स्तरों तक कल्प प्रेमपंदि की आवृद्धि नी विविधता एवं गहनता इसकी अभ्यासक एवं साहित्यिक महत्व नी धौतक है। विषय नी व्यापकता, पारिति प्रियोग नी खुफिया, अवाक्षरता, संवाद, सलील वातवरण, आधा नी गंभीरता, प्रवाहप्रवाह औली एवं लोक अंतर्द्दश भावता नी हासि से प्रेमपंदि नी लदावयां आद्वितीय हैं।"

प्रेमपंदि के थुग-प्रवर्तक अवदान नी यर्थ उस्तु हुए हैं। लोहे लिखते हैं "प्रथमतः उद्दीप्ति १४ वीं शताब्दी शाहित्य की अनांशिक के स्तर से उठाने जीवन के साथ सार्थक रूप से निर्मित का काम किया। पारों और कल्प हुए जीवन और अनेक सामाजिक समस्याओं ने उन्हें उपचार लेरवन के लिए प्रेरित किया। महान् भावित्यकार प्रेमपंदि नी लदावर्थ के सर्वमें भी अमल लियोर्द गोथिका लिखते हैं। प्रेमपंदि हिन्दी के पहले ऐसे लेखालिक थे। उन्होंने लदावी नी एवा के साथ-साथ लदावी आधुनिक शास्त्र की भी अवधारणा प्रवाह किया। प्रेमपंदि ने अधिक 'सांख्यिकी' एवं 'जगत्' लदावी तक भी लगाया। तीन और लदावी नी अपना की थी उनका लदावी शास्त्र अभ्यास आसन्नता है। प्रेमपंदि के अंतर्द्दश भावित्य नी विविधता और भवित्व की परिवर्तन लगता है। प्रामाणिक भाव से अर्थ नाइ नहीं ले या लगता है।

(5) गुल्ली डॉग कानी का विशेषण यह है कि इसमें आमिभवत परिवन मूल्य को रखांकित किया।

- हिंदी साहित्य के कथासंग्रह और पुरोधा प्रेमचंद द्वारा रचित साहित्य प्रेणास्थीत हाल के साध-साध सामाजिक, चांस्कारिक और नैतिक जीवन मूल्यों को आमिभवत करती है। सभतामूलक साधारणी का प्रभास करने वाले प्रेमचंद अपने काबिलीय साहित्य के माध्यम से जाति, साहस्र और सभभाव का विवेश देते हैं।

गुल्ली डॉग कानी में आमिभवत परिवन मूल्य

प्रेमचंद अपने साहित्य के माध्यम से जीवन के किसी न किसी पक्ष की समाप्ति के भवक्ष ध्यानपूर्वक करते हैं। सामाजिक और चांस्कारिक परिस्थितियाँ और प्रवालियाँ जो सामंजस्य करते हैं उनका साहित्य जीवन की तलाएँ करती हैं। प्रेमचंद जीवन की जालभावी गुल्ली डॉग में आमिभवत परिवन मूल्य को रखांकित करती है।

सद्यता और उत्तमता के भेदवे जो उद्घाटन

मुमानिष्ठ जानी गुल्ली डॉग बदलते वक्त जो साध सद्यता और उत्तमता के समान होने की मरम्मती आमिभवत है। लोकवाक्य पर गया QR एवं गुल्ली डॉग एवं इस एवं इस जानी जीवन की विषय-वस्तु है। गुल्ली डॉग जानी में कथाकार ने कौशल से इस सद्यता को खोल किया है कि पद और प्रतीक्षा भूषण के लिए जीवनीयिक समानता को समाप्त कर देते हैं। इनीनियर वक्ते जो उन लोकों गुल्ली-डॉग एवं इसमें गया जो समकाक्ष रिक्षावी वही रहता।

जीवन के व्यापक कालका का विचारन

शुल्ली-डॉ गहानी

जीवन के व्यापक कालका को दर्शाती है। इसमें रामेश हो जाए विषय धूला हो। प्रेमचंद्र के साहित्य में आम जन-जीवन से खुट्टी बतनाओं, समस्याओं, विश्वपताओं आदि का अधार पर्याप्त वर्णन दियता है। शुल्ली डॉ गहानी का अध्ययन, स्वेच्छा, व्याकरण और पारिवेश अति प्रामाणिक है। इसका मुख्य उद्देश्य रखने के बहाने पर अलग समाजों की मानासिकता की एक छोटी लीप बनापने वाली दीवार को दर्शाता है। यहाँ दाखिल समाज के एक लड़के का नीशाल, विनाशक व सीमा भी दर्शायी जा सकती है। इस गहानी को ज्ञानपन दियाने और प्रामाणीकरण का उद्देश्य देने के रूप में भी पढ़ा जाता है। अपनी सीमाओं के बावजूद दो दिव्यांगों जा निर्विध बचपन की स्मृतियों का सम्मान देना इस गहानी की अत्यन्त उपलब्धि है।

पद और प्रतिष्ठा से उत्पन्न दीवार

शुल्ली डॉ गहानी का मुख्य पार्श्व दीवार का हो जा और उसका लिंग ग्राम गरीब था। उपर्युक्त में दोनों में उच्च-नीच जा अवतर नहीं पा। अथा नायक उड़ा दीवार जल्दी उठा गया। १६ अपने लाल सरपंग ग्राम के आप शुल्ली-डॉ रखने गया परन्तु अपने लिंग ग्राम के दील में उसको नहीं दिखाई दी जो उपर्युक्त में थी। उस लगा कि उसकी अकसरी दोनों के लीप दीवार उठ गई थी। ग्राम उसके आप उत्तर नहीं था, उसका भन ऐसे रहा था और उसकी हर व्याख्यानी को बिना विश्वाय किए उसने तरफ नहीं रहा था। उसके पद और प्रतिष्ठा दोनों में असमानता जा आये उत्पन्न कर दिया

व्यपक के अनुत्तरों की कानूनीति

मुख्य - का । व्यपक

दोस्री तीसरी की दोनों हैं। इसमें व्यपक की आवश्यकता नहीं है।
 मुख्य - का आवश्यक नहीं है। व्यपक से जुड़कर उपरोक्त व्याधियों के
 खाल मुख्य - का रखना चाही तो व्यपक व्याधि के बाद
 वह उसी व्याधि पर उपरोक्त व्यपक के खाली के पास गया और
 इसके खाल मुख्य - का रखने के लिए उसने उपरोक्त व्याधि के बाद
 में पहले जीजा आत्मद बही तो यह है। इसके आरंभ व्याधियों की लिए
 कलकी अधिकारी दीवार बन गई है। मुख्य - का व्यपक की दूसरी
 व्याधि एक अद्वितीय व्याधि है। मुख्य - का एक आवश्यक व्यपक
 है, रेलों के संचार में वह अस्तित्व लीक नहीं कर पायता है।
 जो भी गांव में पहले - वह है, वह रेल के अस्तित्व के खाली के पहले तुम
 अकिञ्चन कलकी क्षेत्र में अस्तित्व होता है। यह व्याधि को पहले तुम
 पाठकों को अपनी व्यपक जीवाणुकां एवं अपर्याप्ति, दृढ़, धृतिशुद्ध
 एवं दृष्टि के आवश्यक आते हैं। रेल के जहाँ की जीवाणु
 के परिवर्तन का एक पहला गांव यह व्यपक है।

पार्सिपित एवं अनुत्तरों का व्यपक

कक्षाति के अनुसार व्यपक
 मनुष्य जीवन की वह अवस्था है। इसमें प्रेम और आनन्द
 एवं आवाधिक आवन दिती है। जब वस्त्र दौत हो और
 एशियाना जीवन में प्रवेश करत है तो सबसे प्रेम नहीं होते और
 अपनों अपना अमर्षने की आवश्यकता नहीं होती है।
 मनुष्य और मनुष्य के दो प्रकार - नीच, व्याधि - व्यापक -
 और ऊपरी है और उसमें आवाना एवं अस्तित्व आवाना परिवर्तनी
 की देश है।

जो वर्षे आप एवं उनके बड़े होते हैं, तबमें वर्षान्पन
में जो समाजता और अपवर्ग होता है, वह को होते हैं पर असमान
हो जाता है। जो वर्षे होते हैं पर किसी को पर पर मिलता
होता है उसके प्रतिश्टो और जायजा स्वाक्षर हो जाता है। १९८५
वर्ष की दूसरी से लगा मानता है और जो इसके से भर उत्तरा
है तो दूसरी जी उसके पर-प्रतिश्टो से प्रभवित होता है।
अपने से लगा और आज जो पत्र मानने लगते हैं।

रवेली के प्रति लगाव

मुझे युल्ली ही सब एवली से
अद्यती लगती है और वर्षान्पन जी भी स्मृतियों में युल्ली
की अवसरे भी है। १९८५ प्रातः काल दो बजे प्रश्न आया, १९८५
पर पर एक दृष्टियां आया और युल्ली-डॉ के बवाहा,
वह उत्साह, वह एविलाडियो का व्यवधटे, १९८५ परिणा और परिणा,
वह जड़ाई-जगड़े, १९८५ अक्टूबर स्वामान, जिससे धूट-अधूत, अली-
गरीब का विलक्षण भेद न रहता था, जिससे अनीसत चापना
की, प्रवर्गनी, आमिना जी गुजारेगा ही न था, यह उनी
वक्त भूलेगा जब.... जब.... धरवाले विगड़ रहे हैं, १९८५
पाके पर बंड वर्ग से रातियों पर अपवाह गोप्य उतार रहे हैं,
अम्भा जी पर लवल दोहरा रहा है, लौकिक उनकी विवाह-
धारा में मेरा अद्यकारप्रथा भविष्य छोटी हुई लांका जी तरह
उगमगा रहा है; और ऐसे हुए लि पढ़ाने में भक्त दूं, न नहाने की
सुखी है, न रहने की। युल्ली है तो पर सी, पर उसमें
दुमिया भर जी प्रियाश्यों जी लियस और तमाचों जा अमंद
भरा हुआ है। वर्षान्पन प्रेमचंद आखीय शब्दों जी प्रेमास जरूर
हुए लिखते हैं — "हमारे अंगुष्ठी लूसत मामे था त मामे में
तो यही लूसूगा कि युल्ली-डॉ सब रवेली जा राखा है।"

हमारे अंग्रेजी वोस्त मार्ने या न मारने में तो यही गहूँगा की गुलजारी -
 ₹८८ अब रवला का राखा है। अब भी कभी लड़कों की गुलजारी -
 ₹८८ रवलते देखता हूँ, तो जी लौट-पाट हो गता है कि इनके साथ
 खाकर रवलने लड़ू। न लाल की खरात, न काई की, न गोटकी,
 न पापी की। ऐसे भी किसी पड़से के एक १६वीं लाट जी, गुलजारी
 गहा जी, और दो आदमी भी आ खाए, तो रवलत चुरा हो जाया।

शाश्वत परिवर्तन की परिकल्पना

लीस भाल गुण्डर आए...

मैले इंग्लिशियरी पास की ओर उसी जिले का दौरा करता हुआ
 उसी जरूरि से पहुँचा और डाकबंगले में ठहरा। उसने देखा खड़ा
 श्वासद था, वहाँ पकड़े मालाएँ रखे थे। उसी वर्षाद का पुराना
 पड़ था, वहाँ अब एक छुन्दर बाजिया था। स्थान जी जाया
 पलट हो गई थी। लीस वही लाद उत्तरार उनकर जह लेवल
 कार्ये में लौट और ज्ञापने वयपन ने साथी गाया ने साथ
 गुलजारी - ₹८८ रवला तो उसको लगा कि गया ऐसे रवल का विश्वेष
 कर १६ था। इसके अगले दिन गया ने बुलावे पर उसने
 गुलजारी - ₹८८ का भैंच देखा तो उसने उसके रवल में पहले से भी
 श्वासद परिपक्वता पाई। यह देखकर उसने सोचा कि अब मुझे
 मालूम हुआ कि जल गया ने मेरे साथ रवला नहीं, लेकिन
 रवलने का लक्ष्य नहीं। उसने मुझे पसा जा पात्र समझा
 भैंच व्याघ्री नहीं, विमली नहीं, पर उसे जरा भी गोप्य
 न आया। व्यालिज कि वह रवल न रहा था, मुझे रवला १६ था,
 मेरा मन २२व रक्षा था। वह मुझे पदाकर मेरा अपूर्मर नहीं
 लिया। रवलता चाहता था। यह आसरी मेरे और उसके लिए ये
 दिवार उन्हें गई है। मैं अब उसका लिदान पर खाला हूँ।

उमरे मुझे दूसा जा पात्र समझ में आयी नी, वेइमारी
नी, ५८ उसे जर जी कोव न आया। इसलिए कि १९ रव नं-८
१६ था, मुझे रविवार १६ था, मेरा मन २२व १६ था। १९ अप्रैल
पहले मेरा काल्पनिक दृष्टिकोण न्यायिता था। यह अक्सरी मेरे
आँख उसके बीच में दिवार-बन गई है। मैं अब उसका लिंगभ
पा भक्ता हूँ; अब वा पा पाकर क्षमा में जैल उसकी दृष्टि चौम हूँ।
१९ अप्रैल अपना खोड़ नहीं समझता। १९ अप्रैल ही गया है, मैं लोट
ही गया हूँ।

भौतिक भूमि वा उद्घाटन

उद्घाटन के दृष्टिकोण से 'गुरुली-डॉज'

उद्घाटन में इस भौतिक भूमि वा उद्घाटन किया है कि उद्घाटन
के नगान अपर्याप्त वाले साधियों में से ही पर पर पर, प्रतिष्ठा,
आर्थिक व्यवस्थि आदि असमान होने पर उपर्युक्त जैसी समानता
नहीं रहती। उनके आपसी व्यवहार में असमानता आ जाती है। उद्घाटन
आपसर है और यह अपश्चृंखला है। यह अन्तर उनके रखल में अधिक
रहता है। गुरुली-डॉज जाहाजी जा भूदेश यही है कि पर,
भौतिक और आर्थिक अन्तर आदि ही के लाये गुरुष्य—
गुरुष्य के बीच की भौतिक समानता समाप्त हो जाती है।
उद्घाटन आपसी व्यवहार भी पहले जैसा नहीं रहता, उसके
प्रियता है और अन्तर आ जाता है। ऐसा ही एवमाविन है।
शास्त्रप्रभाव के लाये गुरुष्य प्राचुरिता आपसी नहीं हो जाता
है और उनावसी अस्त्र आपसी जा बन जाता है।

अंतः: जह भात है कि प्रभयं ने गुरुली डॉज जाहाज
के लायन से कोई सुधारता से अन्त सरोकार और विना
कुल्य आविष्यकता नहीं है।

इसके अड्कनपन, ग्रामीण रूपों की तरफ और रूपों के मेवान में जो एविलाडियों की लोगोंला, नासिरवायपन, विनम्रता, पालाकी और जिद्द के लिए भी जाहाज जो सहता है। गुलली ८८८ कदाकी जो रूपों के मेवान में एविलिपि उपयोग और है। सीधत अनुसार खण्डन होते आवश्यों की रीमान सामाजिक जो प्रस्तुत जैनों का प्रयास किया गया है। आज की इस भाँग ८५८ भरी जिद्दी में हमसर के आजी ने दीवारे बन गए हैं। १९७४ की तातों के बदलते, बहते और विगड़ते स्वरूप तथा भरभता, १९८८ की और सहित के अमन ने जिक्री के जु़ून जो उपर्युक्त आगोश में ले लिया है। आंदबर, आविष्वास, अकेलेपन, अपश्चिपन और अलगाव ने भूष्य जो भगीर जी भाँति उन्होंने है। कथासम्भाट प्रेमचंद की भुजाशीष जदाली गुलली ८८८ इसी संवर्धनी जो पारिलालित जैती है युग प्रतिक और भदान साहित्यकार प्रेमचंद जो नई समाज से जुड़ा हुआ साहित्यकार भवता है तो उन्होंने गोषितों और वंचितों जो प्रातिकाली।

किसी दो डलकी सूक्ष्म व स्त्रीक भवेदवा जी प्रवासी की तो किसी ने डलकी सूक्ष्म व स्त्रील शिल्प लोगोंला का हय तो रथायिता जी सभुर्व रातियों में एक अलविहित घोलन व्यारा देवगना पाहत है। वह व्यारा हमें प्रेमचंद में नहीं लिली। धरना लकुल्य और वर्णनों जो अनावश्यक विभास डलमें लकुल्य अपिका है। क्षस्से डलकी गला में लकुलता आ गई है। अपापि जालांतर में उड़ाने अपने जिक्राधीं में संवादित जैत हुए। साधारण विवेक, अनुभव जी भाँदता, आत्मविष्वास और कथा जो स्वामानिक सीवर्धनी प्रेमचंद जी उसी विभाषता है, जो उन्हें हिन्दी लक्षातियों जो श्रेष्ठ निमता रिष्ट गई है।

સુખાન ભગત જાણી ના મંત્ર્ય

પ્રેમચંદ સાહિયાનો સામાજિક

સરોકારોને હાડને કે પક્ષબાર સાહિયાનાર હું | તનકા સ્વરૂપ
નખન હું કી "સ્વરૂપ વહી જો હમે સુલાણ નહી વર્સુ હમારી
ઘેતના જો અક્રિય કણાણ" | પ્રેમચંદ ની હર મજા રચનાઓ કુદ્દ
ન કુદ્દ સામાજિક ઉદ્દેશ્યોનો આજીવનની નરી હું | સુખાન ભગત
ની મનોવૃદ્ધિ ઔર પ્રવૃત્તિ પર આધ્યારિત અને દુરા રચિત સુપ્રાસિદ્ધ
જાણી જુળાન ભગત નો નિન્દનભિલિત મંત્ર્ય હું —

પરિશ્રમી ઔર કર્મચાર કિસાન ની ગાથા

આધ્યારિક દાન વર્જન

ઔર પુર્ય નર્સ ને જાગો જે સુખાન ભગત ને પણી ઔર વટ
ને ડસ્કો આધીકાર વીન લેણ તો વદ આદત હણાર ડાફની નિદ પર
કેડ ગયા ઔર ડસ્કો આધ્યારિક પરિશ્રમ એ રૂપો મે અનુછી ધ્વાલાર
જરૂરે ઔર વન માર્ગિત નર લેખાઇસ તરફ વદ મજ નિદ, કર્મચાર
ઔર પરિશ્રમી કિસાન ની હું, જેસે અપાન અપાન સહન નહી હું |
સુખાન ભગત ને કિસાન કે ડસ્ક પરિશ્રમી જમણતા નો ડિઝાઇન
કિયા હું જો અપને બલ પર વારતી એ જીના ડિઝાન સાકન્ત હું |
અપની જમણતા ઔર પરિશ્રમ કે બલ પર ડસ્ક ને આધીકારો
જો પુનઃ પ્રાપ્ત કરું લેખાઇસ તરફ વો મનવીય વિજીવિકા જ
મળીનું હું |

વિનભ્ર ઔર ૩૬૧૨ સ્વભાવ ના ઉદ્ઘાટન

સુખાન ભગત

સ્વભાવ નો મજ સાખન ઔર અચંત વિનભ્ર વ્યાજીનું હું |
દાન, વર્જન ઔર પરાપકાર ના ડસ્કો આધ્યારિક સંબંધ
હું, વદ અન ઔર આધીક ડિઝાઇન સ્વભાવ ના જી ગયા હું |

'सुखान भगत' जहानी ना विकल्पण लात हुज उसना
मंतव्य स्पष्ट लीजिए।

हिंदी साहित्य के सरोकार हस्ताक्षर, प्रगतिशील वेतना के
पुरोषों, जपा-सभाओं प्रेमचंद द्वारा रचित साहित्य भारतीय सभापन
के व्यापकों ना विस्तृत परिदृश्य को प्रस्तुत जाती है। गहराँ गहरा
एक और उनकी जड़ानियों में मात्र; अपेक्षियों ना खुक्खा प स्तीका
विकल्पण है, वही इसरी और सभापन में व्यापक गुरुत्वियों और उराईयों
ना अपार्थि और सधान वितरण। उनकी जड़ानियों के तरकारील मारतीय
सभापन जी परिस्थितियों और मवूतियों ना आमिला और अपार्थि वर्णन
मिलता है।

सुखान भगत प्रेमचंद जी श्रेष्ठ जहानियों में से एक है इसमें
आम्बे-जीवन जी आकी प्रस्तुत जी गई है। संशोधन जहानी में सुखान
भगत ही सुख्य पक्ष है। सुखान जी पक्षी ना लाभ बुझानी है। कहा
दिया भाला है और धोप बटा बाला। सुखान भाला-भाला किंतु
एक सज्जन, परापुरारी किसान है। गर्भी, शर्दी तपा वर्षा में जी
पसीना लहड़ाकर रखती कर लाभ लेता है। सीधे-सादे किसान धन
धार्य आते ही धर्म और जीर्ण जी और झुकाते हैं। सुखान जी
पितृवृत्ति जी धर्म जी और झुकाने लगती। साधु-संतो ना
सत्कार, भेदभावों ना अभद्रत, पानेवार अफसरों जी चौपाल, भजन-भाष
आदि होने लगते। सुखान आते विनम्र-उदार बनकर सेवा-यात्री
करता, परन्तु धर्मित नहीं। इसरों के रखेतो जो पक्षी देता। लंगी
वेतन-भगत में आज्ञा सुखान भगत कोई भगत नहीं गया, तो
उसके हाथों में आधिकार धीन जाने ज्ञान गौव में आत जा सभापन
था, परन्तु धर्य में अनादर। जड़ते आजी चाली तो रखूब करते, परन्तु
आधिकार उनके हाथ में था। अब वर ना बाजी नहीं, बल्कि
मार्दी ना देवता था।

सीपा वालरी करने में उसे किसी प्रकार जा अंदार भी नहीं है। अपने शेषा गाव के लाले के दूसरे किसानों के खेत में भी पानी दे आता है।

परोपकार की आवश्यकता जा पिता

सुबान तो मानो बहर जा आयी है। पिता जा भदीना था। खगड़-खगड़ अनाधि के देह लगे दुःखे थे। थही किसानों जा सफल जीवन है। सुबान अनाधि भरकर देता भीर पटे अंदर १२व आते। कितने ही आठ और अधिक अगत लोहे १६ते। जो अधिक आठ भदीने पहले अगत ले धार से पिशव लील था, उसे अगत ने आज सूख-सारा अनाधि देकर वादा किया। सुबान ने इसमें कहा आनंद लिला था। उसने गीला से गहरा— ये भाट और अद्युक्त रहके हैं, लोई रवानी दाप न लौटने पाया। भोला सीधे झुकामे रहा था। उस कुद लोकने जा हीसला द हुआ। पिता जी परोपकारी प्रवृत्ति वे उसे ५२५त लर दिया था।

सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में रुचि जा वर्णन

सुबान भगत झुग्ग लर्फ-लर्फ में आधिक ही जाता है। १६ वान पुण्य के कार्य आधिक जाने जगता है। साधु संतो जा साकार भवने वापाल, अतिथि अकार, वान-पुण्य जैसे अनेक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि आधिक ही जाती है।

एवाजिमाली चरित्र जी अभियानों

पैद के नीरे हैंड्लार सुबान जवा विवारों में मृन १६ता। १६ जाई अपाहिज नहीं, धर जा भव जाम जाता है, किर जी यह अनाधि। अब वह धार पर

जा गुला है, जो कर्या-सूखा मिले, वही रवाना हुआ १४वा।
जिसे जीवन जो विकार है। उसने रात दिन में नहीं आया।
पसीना बढ़ाया, असुख खड़ा, ५८ आज भीरव तक देने जा आयिकार
उसे गही है। सुखाने की पर्णी तुलामी भी आगत जा विश्वेषणी है।
अब उस लक्ष्ये परे जगते हैं और पति निशद् विहे के लिए
माँ और भाँ के लिए बहे। आठ महीने के निरंतर परिश्रम जा
सुखाने की भला मिला था। आज उसको अपना रवाया हुआ
समान और आयिकार किस मिल गया था।

प्रैराज्ञोत के २०८ में प्रस्तुति

प्रभुंद अपनी ज्ञानियों में
ज्ञाने के सिर्फ व्याकुलत परिप्रेक्ष्य में न देवकार जामानिक
परिप्रेक्ष्य में देवत है। के सिर्फ चरित्र जो रहते गही वस्तु तो है।
प्रैराज्ञोत के २०८ में प्रस्तुत नहीं है। सुखाने आगत कर्ता के
प्रभुरव पात्र सुखाने जनकी इसी मंत्रये गे परिजाति जर्ती है। सुखाने
आगत विनय, ३६१२ और सज्जन प्रवृत्ति होते ने साध-साध जार्ति
और परिश्रमी जर्ती भी है। १०८ और वहाँ व्याख्यिक मनोवृत्ति होते
के जारी के अत्यधिक लाज वर्जन करते हैं तो इसरी और सर्वी-ग्रामी
की परवाह किंविता अपनी रहतों में अपने परिश्रम जर्के कर्त्तव्य जो
जगा जाते हैं।

परिवासिक धर्म व्याजी की विकार

परिवार आर्तिक
समाज ने प्राप्तिक इकाई है। ज्ञाने के संकार और जार्तिकार
के नियन के पीछे परिवार जी परिस्थिति और प्रवृत्ति जा आय
थार्गान धोता है। कजी परिवार उसके जार्ति में सहयोग रखता है।
तो कजी उसे असहमति रखता है। सुखाने भगत के परिवार जी

सुखान भगत के परिवार की ऐप्पिटि भी यही है, जब सुखान सामाजिक और धार्मिक कार्यों की ओर आधिक उल्लेख हो जाता है, तब परिवार के अन्य सदस्य इनसे २०० ट दूर पातह हैं। सुखान भगत के परिवार के सदस्य अपार्थ द्वादश से सोचते और कार्य करते हैं। जबकि इसके विपरित सुखान भगत के कार्यों में लैटिकला ज्ञानवानी है। इस अंतर्विशेष और असामंजस्य की ऐप्पिटि के माध्यम से प्रेमचंद ने परिवारों के तनाव औं विवरण लो प्रस्तुत किया है। सुखान भगत जहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने उस समुदाय परिवार के व्यक्तियों की ओर सकेत कर्त द्वादश इसके आधर्व ४५ से संकल्पना प्रस्तुत कर्दे गा प्रधास किया है। यहाँ आजवता के शास्त्र भूल्य उज्ज्वले ही और सामाजिकता की अपनाऊ ने कल जिले।

उपयोगिता बनाने स्वतंत्रता

वर्तमान समय में अगर हम

परिवारिक औं सामाजिक संदर्भों में व्याकुल के महत्व जा मूल्यांकन करें तो स्पष्ट परिलक्षित होता है कि अगर व्याकुल उपयोगिता है विशेषज्ञ आर्थिक द्वादश से तो उसकी स्वतंत्रता और चला वर्कशॉप रहती है। सुखान भगत जहानी के प्रांगम में जब सुखान आर्थिक २०७ से सक्रम और उपयोगिता के तो उसकी स्वतंत्रता शीलित होती गयी। सुखान भगत आर्थिक धार्मिक और दूसरी प्रृष्ठियों के लाला साधु-संतो और भिक्षुओं ने जी भर कर बाज देते हैं। के एक भिक्षुक से लेते हैं "तुमसे पितना उठ सके, उठा लो।" परंतु वीरे-वीरे यह ऐप्पिटि परिवर्तित परिवार भारतीय समाज ने प्राप्ति के संबंध और कार्यकालापन के नियमों के लिए परिवार ने परिस्थिति और प्रृष्ठियों ने अहम योगदान दी है।

सुखान अगत की जारी ही नैतिकी जागरूकी है। १९८८ उत्तरविहारी
और डांसामाजिक जी स्वीटि के मालियर से प्रेमचंद जी परिवार
के तलाश पर विरोध जी प्रस्तुत किया है। सुखान अगत गवाई
के मालियर से प्रेमचंद ने ३२८ परिवार के वयार्थ की ओर जाते
से जो जारी रहते हैं। वक्ति इसके विपरीत सुखान
अगत के परिवार के ७८५८ वयार्थ हृषि से जो पते और
जारी रहते हैं वक्ति इसके विपरीत सुखान अगत के जारी में
नैतिकी जागरूकी है। १९८८ उत्तरविहारी और डांसामाजिक जी स्वीटि
के मालियर से प्रेमचंद जी परिवार के तलाश पर विवरण
को प्रस्तुत किया है। सुखान अगत गवाई के मालियर से प्रेमचंद
हो उत्तर भाष्यकार परिवार के वयार्थ की ओर जाते रहते
हैं। १९८८ उत्तर आदर्श २५ जी साम्पत्ति प्रस्तुत रहते हैं।
प्रयास किया है। वहाँ मानवता के बाह्यत मूल्य उत्तरवाल हैं।
और सामाजिका जी आवनाओं को छह लिङ्गों वर्तमान समय
में अगत एवं पारिवारिक पर आभाजिक संघर्ष में व्यक्ति के
महत जा प्रयोगन करे।

सुखान ताकत जी, इसी ताकत से १६ जन। जिन अपने
आधिकारी जी १९८८ जल्द ही लालके १६ अग्नि पुरी चुवा
पीटी जी स्वार्थ परस्त १२वें उसके अंदर जी लोपा दिवाकर
इसे खोवते जो लाल्य कर देते हैं। प्रेमचंद ६१२८ रचित सुखानिष्ठ
काण्डी सुखान अगत उक्ते साहित्यिक मंत्र्य से पारिभाषित
रहते हुए आभाजिक आदर्श जो आभेमान रहते हैं साथ
साथ पारिवारिक और सामाजिक वयार्थ की भी उद्दार्त रहती
है। सुखान अगत के परिवार के मालियर से प्रेमचंद जी जाता जाता है।